मेरी अंतिम यात्रा

हम अपनी शव यात्रा का आनन्द ले रहे थे ।
लोग हमें ऊपर से कन्धा,
और अन्दर से गालियां दे रहे थे ।।

एक धीरे से बोला, "पट्ठा क्या भारी है",
दूसरा बोला, "भाई साहिब, ट्रक की सवारी है।
ट्रक ने भी मना कर दिया,
तभी तो इसकी अर्थी,
हमारे कन्धे के ऊपर जा रही है" ।।

एक हमारे आफिस का मित्र बोला,
"इसे मरना ही था तो सण्ड़े को मरता।
कहां मंडे को मर गया बेदर्दी,
एक ही तो छुट्टी बची थी,
कम्बख्त ने उसकी भी छुट्टी कर दी" ।।

एक हमारे पडौस का मित्र बोला,
"तुम्हारा काम भी कोई काम था ।
हमारा तो बीवी के साथ,
हनीमून का प्रोग्राम था ।।
अब पहाड़ों और घाटियों का सुख छोड़कर,
धूप में खड़े हैं ।
जेब में एयर कंडीशन्ड के,
दो टिकट बेकार पड़े हैं" ।।

इतने में हमारे मोहल्ले का कुल्फी वाला आगे आया,
और उसने जैसे ही अपना कंधा हमारी अर्थी को लगाया,
कम्बख्त के मुंह से आवाज आई, "ठंडी-मीठी बर्फ मलाई" ।
कोई बोला, "कमाल है भाई! यहां पर भी धंधा,
दुकान लगा रहे हो कि कंधा" ।।
कुल्फी वाला बोला "क्षमा करें, क्षमा करें,
मुंह से निकल गया तो क्या करें।
ऐसा नहीं मैं शवयात्रा के कायदे-कानून नहीं जानता,
पर इस मुंह को क्या करूं जो नहीं मानता,
जैसे ही कोई वजनदार सामान कंधे पर आता है,
मुंह से बर्फ मलाई पहले निकल जाता है" ।।

संकलन कर्ता: मनमोहन कुमार गोयल, वैज्ञानिक "सी"

पूरी यात्रा में केवल एक आदमी बड़ा दुखी था,
बेचारा फूट-फूट के रो रहा था,
किसी ने पूछा "क्या तेरा मरनेवाले से इतना प्रेम था,
कि उसके लिए थोक में आंसू बहा रहा है"।
वो बोला, " भाई साहिब! मरने वाले को मारो गोली,
हमको तो अपना सौ का नोट याद आ रहा है।।
हमने अपने बाप से ले के दिया था,
और अभी तो ब्याज भी नहीं लिया था,
कि ये तो इंटरवल में ही मर गया,
हमारे लिए कितना टैंशन कर गया।
अब हम अपने बाप को क्या मुंह दिखाएंगे,
उनको पता चलेगा तो,
सौ रुपये के लिए हमको बेच आएंगे"।।

इतने में ही पीछे से आवाज आई,
"यार क्या भयंकर धूप है"।
दूसरा बोला, "मरने वाला भी खूब है, मरा भी तो जून में,
इस समय तो आदमी को होना चाहिए देहरादून में।।
ये थोड़े दिन और इंतजार करता,
तो जनवरी में आराम से नहीं मरता।
अपन भी जल्दी से घर भाग लेते,
जितनी देर बैठते, सर्दी में आग तो ताप लेते।।
भला मरने के लिए जून का महीना कितना बोर है ।
कोई बोला "हां यार जनवरी में मरने का,
मजा ही कुछ और है"।।

तभी पीछे से आवाज आई,
"बड़े भाई! आप तो जनवरी में ही मरेंगे"।
वे बोले, "नहीं! हम फरवरी में प्रस्थान करेंगे,
जनवरी में हमारा इन्क्रीमैंट आता है,
भला हिन्दुस्तानी कर्मचारी भी,
अपनी वेतनवृद्धि छोड के कहीं जाता है ।।

तभी शायद किसी को शमशान दीखा,
वो मारे प्रसन्नता के चीखा,
"राम नाम सत है"।
एक अधमरा बोला, भैया!
मर तो हम रहे हैं,
मुर्दा जी तो अपनी जगह मस्त हैं ।।